भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-12, अंक-6-7 मंगलवार, 25 जुला. '89	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00 प्रति अंक : 1.00

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानन्दस्वामी

धरमपुर की रानी कुशलकुंवरबा की तीव्र इच्छा थी कि इस कलियुग में प्रगट प्रभु के दर्शन हो जायें। सद्. मुक्तानंदस्वामी व मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी पहले धरमपूर होकर लौटे थे। गुणातीतानंदस्वामी ने महाराज को हाथ जोड़कर कहाः 'महाराज ! भागवत में रुकमणी के हरण की कथा आई तब रानी ने कथा करने वाले पंडितजी को साफ-साफ सुना दिया था कि 'रुकमणी की तरह मेरी कलाई जब प्रगट भगवान आकर पकडेंगे तब मेरा कल्याण होगा व तेरा भी कल्याण होगा।' महाराज रानी की यह भावना सुनकर खूब राजी हुए और बोले 'अहो ! ऐसा भाव है? तब तो जाना पड़ेगा।'

और....महाराज संतों के साथ धरमपूर जाने के लिये निकले। रास्ते में सुरत आते देवानंदस्वामी अचानक बीमार पड़ गये। उन्हें सुरत में छोड़कर संघ को धरमपूर जाना था, परन्तु प्रश्न यह था कि उनकी सेवा में कोई रहने तैयार नहीं था। आखिर महाराज ने कहा : 'हमारे निर्गुणानंदस्वामी (गुणातीतानंदस्वामी) कहां है? उन्हें बुलाओ, **वह हमारा वचन माने ऐसे हैं।**' फिर स्वामी को बुलाया। स्वामी तो महाराज की आज्ञानुसार देवानंदस्वामी की सेवा में रुक गये। महाराज संघ के साथ धरमपूर जाने निकले।

स्वामी ने देवानंदस्वामी की दिल से खूब सेवा करी। थोड़े दिनों में ही देवानंदस्वामी की तबियत अच्छी हो गई। स्वामी की श्रद्धा व महिमा-सभर सेवा से देवानंदस्वामी अत्यंत राजी हो गये। उन्होंने स्वामी को कहा : 'तुमने मेरी बहुत सेवा करी है। इस लिये मैं राजी होकर तुम्हें महाराज की प्रसादी की यह डफली देता हूं व मेरी गानविद्या भी तुम्हें सिखाने की मेरी इच्छा है।' परन्तु महाराज की प्रसन्नता के सिवाय और किसी अन्य पदार्थ में स्वामी की रुचि ही नहीं थी। स्वामी तो सदा निःस्पृही थे। इसलिये स्वामी ने विनयपूर्वक देवानंदस्वामी को कहा : मैंने आपकी सेवा डफली पाने के लिये नहीं करी। मैंने तो महाराज को राजी करने आपकी सेवा की है। इसलिए प्रसादी की डफली आप अपने पास रखो।' इस प्रकार डफली देते हुए स्वामी दुबारा

बोले 'स्वामी, मुझे तो सुबह जल्दी उठकर महाराज की मूर्ति का ध्यान करने की आदत है, इसलिये वह छोड़कर सुबह गानविद्या के सुरों को छेड़ना मुझे नहीं जंचता।' यूं विनयपूर्वक दोनों बातें वापस कर दी !

स्वामी को महाराज की मूर्ति ही कितनी अधिक प्रिय थी वह इस छोटे से प्रसंग से स्पष्ट दर्शित होता है। इससे भी अधिक महाराज को व्यापक में निहार कर महाराज को राजी कर लेने की एकमात्र चाहना.....स्वयं अनादि अक्षर होते हुए भी एक सेवक के धर्म से जीये.... महाराज को भी स्वामी का कितना भरोसा होगा? जो हरेक छोटे कार्य के लिये वह यही वाक्य बोलते थे कि स्वामी को बुलाओ, वह हमारे वचन को नीचे नहीं गिरने देंगे ! **–क्रमशः**

× × ×

श्रावणी पूर्णिमा.....रक्षाबन्धन

भारतीय संस्कृति में 'रक्षाबन्धन' का पर्व अपना अनोखा स्थान रखता है। जगत में यह त्यौहार भाई व बहन के बीच की एक पवित्र भावना व पवित्र संबंध का प्रतीक है, परन्तु सही दृष्टि से देखा जाये तो यह त्यौहार केवल भाई व बहन के ही रिश्ते का त्यौहार नहीं, वरन् इसकी एक अलग आध्यात्मिक महत्ता भी है। हम में से किसे 'रक्षा' नहीं चाहिये? काल, कर्म व माया से हरेक भयभीत है ही। धनसत्ता, राजसत्ता, मनसत्ता व इन्द्रियां अन्तःकरण की वृत्तियों ने हरेक को तृष्णा मृग व लालची बना दिया है। धन, स्त्री व मान के अधीन स्वयं भाई-भाई के खून का प्यासा हुआ है। ऐसे वातावरण में हर कोई 'सच्ची रक्षा' व सच्चा आनन्द प्राप्त करने की लालसा से व्याकुल हो रहा है।

प्रश्न यह उठता है कि अगर 'रक्षा' मांगनी ही हो, तो अनंत हाथ वाले से क्यों न मांगे? या वह हाथ वाला जिसके द्वारा सम्पूर्ण रूप से नख शिखापर्यन्त सांगोंपांग प्रगट हो, जो हमारे बाहरी व आन्तरिक कुरुक्षेत्र का अंत लाकर हर प्रकार की रक्षा करने में समर्थ हो उस संत की सेरे छाया में क्यों न अपना जीवन समर्पित कर दें?

हम सब तो खूब भाग्यशाली....जिस खोज में समग्र जगत दौड़ रहा है वह पवित्र निर्मल गुणातीत संत केवल कृपा से हमारे जीवन में हाजराहजूर साक्षात् मिले है ! जितनी दिल की सच्चाई से हम उनकी शरणागति स्वीकार करते जायेंगे, उतनी ही रक्षा व आनंद हमारे जीवन में अधिक से अधिक महसूस करते जायेंगे।

भगवान स्वामिनारायण ने तो करीब 209 वर्ष पूर्व अहमदाबाद देश 11वें वचनामृत में स्पष्ट रूप से कहा है कि **''आपका कल्याण हो चुका है। आप यदि हमारे में दृढ़ विश्वास बनाये रखोगे और हम जैसा कहें वैसा करते रहोगे तो आप पर यदि कोई भारी कष्ट भी आ पड़े उससे या सात अकाल जैसी भीषण विपत्तियों से भी हम आपकी रक्षा करेंगे। उबरने का कोई उपाय न सूझता हो ऐसे कष्ट से भी हम आपकी रक्षा करेंगे, बशर्ते आप हमारे सत्संग के नियमों का पालन करोगे व सत्संग रखोगे।''**

भगवान श्रीकृष्ण ने भी गीता में यही अभयदान दिया है। दूरदर्शन द्वारा प्रसारित धारावाहिक 'महाभारत' में हम सभी देख रहे हैं

कि अर्जुन कैसा भी है, पर कृष्ण परमात्मा हर पल उसे सहायभूत होते हैं। क्यों? वह कृष्ण परमात्मा के पास सरल रहता है, तो हर जगह कृष्ण परमात्मा ने उसकी रक्षा की।

अरे !–

- o हम प्रभु का आधार छोड़कर अपने बल से–साधन से जीने का प्रयत्न करते है,
- o भक्तों की झंझट, अभाव, भावफेर, अमहिमा के विचारों में फंसते हैं,
- o प्रभु को ही कर्ता-हर्ता, नियंता, प्रेरक, सर्वोपरि नहीं मानते,
- o भव्य प्राप्ति की मस्ती में नहीं रहते,
- o नादानी, भोलेपन या अधिक सयानेपन की माया में जकड़े रहकर परेशान रहा करते हैं

तब भी प्रभु तो अपनी उदार दयालुता के कारण रक्षा करने का सहज स्वभाव नहीं छोड़ते। रक्षा तो वे करते ही हैं–करने वाले ही हैं। हां, हम यदि उनके अभिप्राय को समझकर वर्तना शुरू कर देंगे तो उसके फलस्वरूप 'प्रभु मेरे साथ अखंड है' –इन अनुभूति के साथ हमारे जीवन में एक निश्चिन्तता का एहसास कर पायेंगे।

तो अब हम समय न गवायें व रक्षाबंधन के इस पवित्र दिन पर दिल की सच्चाई से प्रार्थना करें कि हमें जो स्वरूप मिले हैं उन्हें ही अखंड कर्ताहर्ता, नियंता, प्रेरक सर्वोपरि दिव्य मान पायें। किसी के भी अभाव अवगुण में पड़े बिना केवल महिमा से गुणगान गाते-गाते सेवक के भी सेवक बनकर जीवन में भक्ति की एक सौरभ प्रकटायें। अगर हम दास के दास बनेंगे तो 'रक्षा' अपने आप हमारे मार्ग की दासी बनेगी और वही सच्चे अर्थ में हमने रक्षाबन्धन मनाया....!!!

× × ×

स्वामी की —बातें

126. भक्ति में स्वभाव बढ़ते हैं और ध्यान में देहाभिमान। इन दोनों गुणों के यह दो दोष समझना और टालना।

प्र-2,177

127. जिस पर बड़े संत की प्रसन्नता हो वह अन्तर में सुख महसूस करता है। और देह में तो सुख या दुःख आये, इस बारे तो कोई भरोसा नहीं। परन्तु हाँ–दिन प्रतिदिन श्रद्धा बढ़ती जाये और उत्तरोत्तर प्रगति होती जाये तब समझना कि बड़े संत प्रसन्न है। और जिसने स्वभाव छोड़े हों या छोड़ रहा हो या छोड़ने में जिसे रुचि हो उन सभी पर बड़े संत की (कृपा) दृष्टि रहा करती है। और एक तो जो सौ जन्म के बाद एकान्तिक होने वाला हो वह इसी जन्म में ही एकान्तिक हो जाये इसी जन्म में कोई एकान्तिक हो सकता हो पर उसे यदि कनिष्ट संग मिल जाये तो सौ जन्म भी लेने पड़े।...ऐसा संग में फर्क है।

प्र-2,178

128. भगवान कैसे है? तो जो जीवात्मा उनके सम्मुख चल पड़ता है उसके लिये तो सारे ब्रह्मांड को भी बदल देंगे। प्रह्लाद का देह ही जीव जैसा कर दिया न?

प्र-2,185

129. जिसे सत्संग मिला, उसे दुःख रह नहीं सकता। दुःख रहता है इतनी सत्संग करने में कसर है.....

प्र-2,186

130. भगवान की मूर्ति, भगवान के साधु और साधु की आज्ञा—इन तीन बातों में जो लाभ है ऐसा किसी में नहीं है। ज्ञान, वैराग्य, धर्म आदि साधन तो कुदाली, फावड़ा और हँसिया के स्थान पर हैं। बड़ों की समझ तो यही है हमने तो एक भगवान ही रखे हैं और कुछ नहीं।

प्र-2,190

131. गुण में भी दोष रहे हैं। वह क्या? तो स्वयं त्याग रखता हो पर अन्य का दोष देखे व स्वयं नहीं सोता हो, पर सोने वाले में अवगुण देखे.... ऐसी कई बातें हैं; वे अवश्य समझनी।

प्र-2,191

132. स्वभाव का बल सबसे अधिक है। क्योंकि—विषय के संकल्प उठे वह तो **'वासना'** है, पर भगवान की स्मृति करते समय जो संकल्प उठे वह **'स्वभाव'** है।

प्र-2,192

ब्रह्मप्रवाह

शुभाशीष : रक्षाबन्धन के—

हमारी प्रत्यक्ष की—धाम धामी और मुक्तों की—दिव्य ही मानने की निष्ठा जीवनपर्यन्त (सम्पूर्ण जीवन) सारधार उतर पाये वह ही सच्ची रक्षा मांगनी है। वैसी (निष्ठा) यदि हो गई हो तो तुम्हारा 'स्व'—विलीन होकर स्वरूपभाव में ही अखंड अनुसंधान रूप से प्रेमपूर्वक रहेगा और विचार से स्वधर्मयुक्त पांच प्रकार का व्यवहार करते रहोगे। परन्तु वहां ब्रह्मशक्ति ही काम करती लगेगी। उसका मंत्र है—'सचेतन, सक्रिय, साक्षीभाव।' वह दृढ़ करते जाना व वैसी जोड़ पक्की करना व सुहृदभाव से वर्तना। तो सर्व प्रकार की रक्षा होगी ही होगी।

2-8-80

प.पू. काकाजी महाराज

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	11.8.89	शुक्रवार	नवमी
2.	दि.	13.8.89	रविवार	एकादशी, व्रत
3.	दि.	17.8.89	गुरुवार	श्रावणी पूर्णिमा-रक्षाबन्धन
4.	दि.	24.8.89	गुरुवार	जन्माष्टमी, व्रत

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashokvihar-III, Delhi-110 052. (India) Tel.: 7229327, 7119525
Printed at R.P. Printers, Shahadra, Delhi-110 032